एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा

(सम्बद्ध बी.एन. मंडल यूनिवर्सिटी, मधेपुरा, बिहार)

****

ऑनलाइन शिक्षण

****

प्रस्तुति : डॉ रिपुंजय कुमार सिंह (हिंदी विभाग,एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा)

****

Scanned by CamScanner

अध्ययन व विश्लेषण शिक्षण

भाग-14

****

बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी, तृतीय वर्ष

****

पंचम पत्र - 'नाट्य साहित्य'

****

Scanned by CamScanner

जयशंकर प्रसाद- 'अजातशत्रु'

[अध्ययन व विश्लेषण भाग -13 का शेष (नाटक का मूल पाठ)...]

अजातशत्रु : मेरे चित्रक के लिए जो मृग आता था, उसे ले आने के लिए लुब्धक को रोक दिया गया। आज वह कैसे खेलेगा?

Scanned by CamScanner

छलना : पद्मा! तू क्या इसकी मंगल-कामना करती है? इसे अहिंसा सिखाती है, जो भिक्षुओं की भद्दी सीख है? जो राजा होगा, जिसे शासन करना होगा, उसे भिखमंगों का पाठ नहीं पढ़ाया जाता। राजा का परम धर्म न्याय है, वह दण्ड के आधार पर है। क्या तुझे नहीं मालूम कि वह भी हिंसामूलक है?

पद्मावती : माँ! क्षमा हो। मेरी समझ में तो मनुष्य होना राजा होने से अच्छा है।

Scanned by CamScanner

छलना : तू कुटिलता की मूर्ति है। कुणीक को अयोग्य शासक बनाकर उसका राज्य आत्मसात करने के लिए कौशाम्बी से आई है।

पद्मावती : माँ! बहुत हुआ, अन्यथा तिरस्कार न करो। मैं आज ही चली जाऊँगी!

वासवी का प्रवेश।

वासवी : वत्स कुणीक! कई दिनों से तुमको देखा नहीं। मेरे मन्दिर में इधर क्यों नहीं आए? कुशल तो है?

Scanned by CamScanner

अजात के सिर पर हाथ फेरती है।

अजातशत्रु : नहीं माँ, मैं तुम्हारे यहाँ न आऊँगा, जब तक पद्मा घर न जाएगी।

वासवी : क्यों? पद्मा तो तुम्हारी ही बहन है। उसने क्या अपराध किया है? वह तो बड़ी सीधी लड़की है।

छलना : (क्रोध से) वह सीधी और तुम सीधी! आज से कभी कुणीक तुम्हारे पास न जाने पावेगा, और तुम भी यदि भलाई चाहो तो प्रलोभन न देना।

Scanned by CamScanner

वासवी : छलना! बहन!! यह क्या कह रही हो? मेरा वत्स कुणीक! प्यारा! कुणीक! हा भगवान! मैं उसे देखने न पाऊँगी। मेरा क्या अपराध...

अजातशत्रु : यह पद्मा बार-बार मुझे अपदस्थ किया चाहती है, और जिस बात को मैं कहता हूँ उसे ही रोक देती है।

(शेष भाग-15 में.....

Scanned by CamScanner